DR. BHAGWATILAL RAJPUROHIT

Dr. Bhagwatilal Rajpurohit is a distinguished scholar whose lifelong dedication to the preservation and promotion of Indian literature, culture, and heritage is unparalleled.

2. Born on 2nd November, 1943 in Chandodiya village, Dhar district, Madhya Pradesh, Dr. Rajpurohit was brought up in a traditional environment. He pursued his Master's in Sanskrit, Hindi. Ancient Indian History, and Culture, followed by a Ph.D. from Vikram University, Ujjain. Proficient in languages such as Hindi, Sanskrit, Prakrit, Pali, Apabhramsha, and Malwi, Dr. Rajpurohit excels as a scholar, educator, and researcher. The authenticity of his research is highly regarded among scholars. He has deciphered epigraph of the ancient Indian Brahmi and other scripts. He has held positions including Director of the Maharaja Vikramaditya Research Institute, Ujjain, and Professor of Hindi at Sandipani Mahavidyalaya, Ujjain.

3. Dr. Rajpurohit established the historical significance of the era of the initiator of the Vikram Samvat, King Vikramaditya, through the mutual validation of archaeology and literature. His research has validated the existence of Vikraramaditya's literary associates and identified the birthplace of Patanjali. He has published numerous previously unpublished literary works on Rajabhoj. He also played a crucial role in identifying the roots of modem languages and cultures through ancient languages. His exploration and publication of copper plate inscriptions underscore his scholarly pursuits.

4. As a renowned playwright, Dr. Rajpurohit has authored over fifty plays in Sanskrit, Hindi, and Malwi, many of which are staged theatrical performances. Notable works include portrayals of Emperor Vikramaditya, “Kalidascharitam”,“Shree Krishna Ujjaini”,“Mahadev”,“Raja Bhoj”,“Shree Krishna”, “Meera”, “Shankutalotra”, “Kaikayi” and depictions of freedom fighters such as, Rana Pratap, Rani Durgavti, Chatrala, Bakhtawar Singh, Tatya Tope, and others. He translated several Sanskrit plays into Hindi and Malwi language. He translated all of Kalidasa's plays and Meghadoot into Malwi. He also rendered Meghadoot and Ritusamhara into Hindi songs. He continuously contributes to pioneering research in the Indian languages of Hindi-Sanskrit and the Indian cultural domain. He has published over a hundred books. Among his notable works are the renowned novels "Vidyottama" (Hindi) and "Lastakah" (Sanskrit).He actively participates in various events, including the Bhartrihari Utsav, Vikramaditya Utsav, Bhoj Utsav, Kalidas Samaroh, and numerous other cultural activities. He played a leading role in the establishment of the Rajpurohit Ashram in Ujjain and the Malwi Kala Sanskriti Sansthan.

5. Dr. Rajpurohit has been honoured with many awards. He was honoured with the Kalidas Award twice, in 1963 & 1964 and with the Bhoj Award by the Madhya Pradesh Sanskrit Academy in Bhopal four times: in 1986, 1990, 1992 and 2000. Madhya Pradesh Sahitya Parishad also awarded him the Bal Krishna Sharma Navin Puraskar in 1990 and Madhya Pradesh Higher Education Grant Commission honoured him with the Dr. Radhakrishna Award in 1990 and 1992. In 2023, he was honoured with the Sanskrit Shikhar Samman by the Madhya Pradesh Government and the Amrit Award by the Sangeet Natak Akademi, Delhi, for his contribution to scholarship in Indian theatre.

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित एक प्रसिद्ध विद्वान हैं जिनका भारतीय साहित्य, संस्कृति और विरासत के संरक्षण और प्रचार के प्रति अद्वितीय समर्पण है।

2. 2 नवंबर, 1943 को मध्य प्रदेश के धार जिले के चंदोदिया गांव में जन्मे डॉ. राजपुरोहित का पालन–पोषण पारंपरिक माहौल में हुआ। उन्होंने संस्कृत, हिंदी, प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल की। इसके बाद उन्होंने विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से पीएच.डी. की। हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश और मालवी जैसी भाषाओं में पारंगत डॉ. राजपुरोहित एक उत्कृष्ट विद्वान, शिक्षक और शोधकर्ता हैं। विद्वानों के बीच उनके शोध की बहुत अधिक प्रामाणिकता है। उन्होंने प्राचीन भारतीय ब्राह्मी और अन्य लिपियों के अभिलेखों के अर्थ निकाले हैं। उन्होंने महाराजा विक्रमादित्य अनुसंधान संस्थान, उज्जैन के निदेशक और संदीपनि महाविद्यालय, उज्जैन में हिंदी के प्रोफेसर सहित कई पदों पर कार्य किया है।

3. डॉ. राजपुरोहित ने पुरातत्व और साहित्य के पारस्परिक सत्यापन के द्वारा विक्रम सम्वत के प्रवर्तक राजा विक्रमादित्य के युग का ऐतिहासिक महत्व स्थापित किया। उनके शोध ने विक्रमादित्य के साहित्यिक सहयोगियों के अस्तित्व को प्रमाणित किया है और पतंजलि के जन्मस्थान की पहचान की है। उन्होंने राजाभोज पर कई साहित्यिक रचनाएं प्रकाशित की हैं जो पहले प्रकाशित नहीं हुई थीं। उन्होंने प्राचीन भाषाओं के माध्यम से आधुनिक भाषाओं और संस्कृतियों की जड़ों की पहचान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ताम्रपत्र शिलालेखों की उनकी खोज और प्रकाशन उनकी विद्वतापूर्ण गतिविधियों को प्रमाणित करते हैं।

4. एक प्रसिद्ध नाटककार के रूप में, डॉ. राजपुरोहित ने संस्कृत, हिंदी और मालवी में पचास से अधिक नाटक लिखे हैं, जिनमें से कई नाटकों का मंचन हुआ है। उनकी उल्लेखनीय रचनाओं में सम्राट विक्रमादित्य के चित्रण, "कालिदासचरितम्", "श्री कृष्ण उज्जैनी", "महादेव", "राजा भोज", "श्रीकृष्ण", "मीरा", "शांकुतलोत्र", "कैकेयी" और राणा प्रताप, रानी दुर्गावती, छत्राला, बख्तावर सिंह, तात्या टोपे, जैसे अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रण शामिल हैं। उन्होंने कई संस्कृत नाटकों का हिंदी और मालवी भाषा में अनुवाद किया। उन्होंने कालिदास के सभी नाटकों और मेघदूत का मालवी में अनुवाद किया। उन्होंने मेघदूत और ऋतुसंहार को हिंदी गीतों में भी प्रस्तुत किया। वह लगातार भारतीय भाषाओं हिंदी–संस्कृत और भारतीय सांस्कृतिक क्षेत्र में होने वाले महत्वपूर्ण शोध में योगदान दे रहे हैं। उन्होंने सौ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। उनकी उल्लेखनीय रचनाओं में प्रसिद्ध उपन्यास "विद्योत्तमा" (हिंदी) और "लास्टकः" (संस्कृत) हैं। वह भर्तृहरि उत्सव, विक्रमादित्य उत्सव, भोज उत्सव, कालिदास समारोह, और कई अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों सहित विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं । उन्होंने उज्जैन में राजपुरोहित आश्रम और मालवी कला संस्कृति संस्थान की स्थापना में अग्रणी भूमिका निभाई ।

5. डॉ. राजपुरोहित को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्हें दो बार, 1963 और 1964 में कालिदास पुरस्कार और मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी, भोपाल द्वारा चार बार 1986, 1990, 1992 और 2000 में भोज पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मध्य प्रदेश साहित्य परिषद ने 1990 में उन्हें बाल कृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार से भी सम्मानित किया और मध्य प्रदेश उच्च शिक्षा अनुदान आयोग ने 1990 और 1992 में उन्हें डॉ. राधाकृष्ण पुरस्कार से सम्मानित किया। 2023 में, उन्हें मध्य प्रदेश सरकार द्वारा संस्कृत शिखर सम्मान और संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली, ने भारतीय रंगमंच में उनके योगदान के लिए अमृत पुरस्कार से सम्मानित किया।